



अगले दिन

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

संदेश साफ़ था। “बारह बजे होटल के सामने रहना। मैं अपनी बेटी और नातिनों के साथ आऊँगी। हम तुम्हें दोपहर के भोजन पर ले चलेंगे। फिर सारी दोपहर साथ बिताएँगे और उम्मीद है कि तुम्हें बोर नहीं करेंगे।” मैं मुस्कुरा दिया। पिछले दिन जो कुछ मैंने अनुभव किया था, उसके बाद बोरियत तो सबसे आखिरी चीज़ थी जिससे मुझे डर लगता। वे समय पर आए। बिल्कुल समय पर। लेकिन इस बार कुछ अलग था। कोई ड्राइवर नहीं था। ड्राइवर को उस दिन की छुट्टी दे दी गई थी। मैगी खुद स्टीयरिंग पर थी। मैं मानता हूँ कि मैंने भगवान से एक छोटी-सी प्रार्थना कर ली। आध्यात्मिक कारणों से नहीं। मोटर-गाड़ी संबंधी कारणों से। मुझे उम्मीद थी कि सब ठीक-ठाक रहेगा। बिना किसी अचरज के। कम से कम उस तरह का अचरज तो न हो। मगर वह पूरी तरह सहज दिख रही थी। वह स्टीयरिंग को उसी आत्मविश्वास से थामे हुए थी जिससे वह बातचीत को चलाती थी। या कोई फ़ैसला लेती थी। या किसी बैठक की अध्यक्षता करती थी।

मन में एक बात कौंधी। हर कोई एक ही तरह से बूढ़ा नहीं होता। कुछ लोग गाड़ी चलाना छोड़ देते हैं। कुछ यात्रा करना छोड़ देते हैं। कुछ फ़ैसले लेना छोड़ देते हैं। मैगी नहीं। वह बस चलती रही थी। मानो समय ने खुद आदर के साथ एक ओर हट जाने का फ़ैसला कर लिया हो। हम लंदन को पार करते रहे। उन्होंने आगे की सीट मेरे लिए रखी थी। वह सीट जो आम तौर पर मेहमान को दी जाती है। मैगी गाड़ी चला रही थी। उसकी बेटी और नातिनें पीछे बैठी थीं। यह एक साधारण परिवार जैसा दिखता था। पर था नहीं। कुछ मिनटों बाद उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं क्या खाना चाहूँगा। कोई पसंद हो तो। मैंने बिना झिझके जवाब दिया। “निश्चित रूप से अंग्रेज़ी व्यंजन।” वे सब ठहाका मारकर हँस पड़ीं। शिष्टाचार वाली हँसी नहीं। असली हँसी। बेसाख़्ता। मैगी अपनी बेटी की ओर मुड़ी। उसके चेहरे पर उस व्यक्ति का भाव था जिसने अभी-अभी अपना सिद्धांत सिद्ध कर दिया हो। “अब समझी न, मैंने तुमसे वे बातें क्यों कही थीं?”

उसकी बेटी बिना कुछ कहे मुस्कुरा दी। मानो मेरे जवाब ने किसी ऐसी बात की पुष्टि कर दी हो जिस पर वे बहुत पहले चर्चा कर चुकी थीं। मैंने कोई स्पष्टीकरण नहीं माँगा। कभी-कभी सवाल बहुत जल्दी आ जाते हैं। जबकि जवाबों को अपना वक्त चाहिए होता है। मैं बस उस अजीब अंग्रेज़ परिवार को देखता रहा। और मुझे यह अहसास हुआ कि कहीं न कहीं, हमारी मुलाकात से बहुत पहले ही, मैगी यह तय कर चुकी थी कि मैं कौन हूँ। मैं तो बस उसके पीछे-पीछे पहुँच रहा था। हम एक रेस्तराँ पहुँचे। उन जगहों में से नहीं जो अंग्रेज़ अभिजात वर्ग की भव्य विलासिता से जुड़ी होती हैं। न कोई वर्दीधारी द्वारपाल। न रुतबे का कोई दिखावा। न कोई बनावटी परिष्कार। उसी पल मुझे यकीन हो गया कि हम अच्छा खाना खाने वाले हैं। व्यंजन-कला भी चीज़ों की कला जैसी है। सबसे सादा चीज़ें लगभग हमेशा सबसे बेहतरीन होती हैं। और मैगी ठीक वैसी ही थी। वह किसी क़िले में रह सकती थी और उसे विला कह सकती थी। वह रानी की तरह बोल सकती थी और लंदन के टैक्सी ड्राइवर की तरह गाड़ी चला सकती थी। वह तुम्हें अपने ही इतिहास के खंडहरों तक ले जा सकती थी और फिर भी एक अंग्रेज़ महिला की गरिमा नहीं खोती थी। लेकिन जब खाने का वक्त आता, तो वह सार को चुनती। दिखावे को नहीं। शायद यही वजह थी कि मैं उसे सुनता ही रहता था। उसकी तलवारों के फ़ौलाद के पीछे मुझे कोई संस्था नहीं मिली थी। मुझे एक स्त्री मिली थी।

फर्दिनांदो फ्रेगा